शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में भ्रष्टाचार एवं सामाजिक परिवेश

कुमारी रूपा, शोध छात्रा (हिन्दी विभाग)
वनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। मनुष्य समाज में रहते हुए परस्पर अन्तक्रियाएँ करते हैं जिससे उनके मध्य सम्बन्धों की रचना होती है। सामाजिक स्थितियों में बदलाव आने से व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों पर भी प्रभाव पड़ता है। स्वतन्त्रता के बाद भारतीय जनता में उत्साह बढ़ा और उसने सामाजिक रूढ़ियों, अन्धविश्वासों के प्रति विद्रोह किया है। पुरानी मान्यताएँ टूटी है और नयी मान्यताओं का जन्म हुआ है। व्यंग्य ने मान्यताओं को बदलने में ख़ास भूमिका निभाई है।प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में भ्रष्टाचार और सामाजिक परिवेश का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

पुराने मूल्यों के टूटने और नये मूल्यों के निर्माण से समाज में अन्तर्विरोध व विश्रंखलता का जन्म हुआ है। समाज की जीवन प्रक्रिया को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों ने राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दिशाओं में गतिरोध को जन्म दिया है जिसके कारण वैयक्तिक मर्यादाओं व सामाजिक प्रतिमानों में परिवर्तन लक्षित हो रहा है। परिवर्तन की यह प्रक्रिया जहाँ हमें नवीनता प्रदान करती है वहीं अनेक नई समस्याएँ भी लेकर आती है जिससे सामाजिक विकास प्रक्रिया में नित नूतन विचार तथा समस्याएँ जुड़ती है।

श्रीलाल शुक्लजी के उपन्यासों में भारत की जमींदारी प्रथा से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति तथा प्रशासन क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की अनैतिकताएँ आदि का यर्थाथ अभिव्यक्त हुआ है। उनका उद्देश्य आम आदमी को अपने यथार्थ से अवगत करना ही है। इसके लिए शुक्लजी ने अपने विशाल अनुभव क्षेत्र को ही आधार बनाया है।

जनतंत्र और भ्रष्टाचार

हमारे जनतंत्र के दूषित होने का मुख्य कारण यहाँ का भ्रष्टाचार है। हमारे यहाँ राजनैतिक बैठकों में जनता के हित में ज़ोर-ज़ोर के भाषण होते हैं। लेकिन प्रशासकीय बैठकों में जनसाधारण के अनुकूल निर्णय नहीं लिया जाता है। वहाँ राजनीति एवं प्रशासन के क्षेत्र के भ्रष्ट लोगों का निर्भय विचरण होता है। यह देखकर विचारवान व्यक्ति अपने को असहाय पाता है। किसी आदर्श पर टिके रहने की क्षमता के नष्ट होने के बाद व्यक्ति अपने को संत्रस्त पाता है। क्योंकि पुराने मूल्य नष्ट हो गए हैं और नए मूल्य स्थापित नहीं हो पाए हैं। इसलिए इस भ्रष्ट व्यवस्था में अपने सक्रिय होने का कोई अर्थ युवकों को दिखाई नहीं देता। वे नौकरशाही और प्रतिष्ठानवादी राजतीतिज्ञों की कूटनीति के दबाव से मुक्त नहीं

है। परमानन्द श्रीवास्तत्व ने 'पहला पड़ाव' उपन्यास के संबंध में लिखा है ''एक अर्थ में निस्संग और दूसरे अर्थ में उद्देश्यपूर्ण सार्थक व्यंग्य के लिए प्रसिद्ध कथाकार श्रीलाल शुक्ल का नया उपन्यास 'पहला पड़ाव' ढ़लती हुई बीसवीं शताब्दी के आखिरी दशकों के सामाजिक परिदृश्य मंे ईंट पत्थर होते आदमी की त्रासदी का मार्मिक बयान है।''1 परिवेश को इस हद तक ले जाने में भ्रष्टाचारिता की मुख्य भूमिका है। शुक्लजी ने अपने उपन्यास 'पहला पड़ाव में घूसखोरी का ज़िक्र किया है। आज के समय में नौजवानों को नौकारी हासिल करनी है तो घूस देना ही पड़ता है। घूस देकर खरीदे हुए नौकरी के प्रति कभी उनके मन में निष्ठा का भाव नहीं होता है। सत्ता हासिल करने के लिए भी धन का उपयोग होता है। धन से काम न हुआ तो मारपीट तक करने में नहीं हिचकते। 'रागदरबारी' में सरकारी अफसर और अध्यापक लोग इस काम में वैद्यजी की मदद करते हैं। वैद्यजी निजी स्वार्थपूर्ति के लिए गाँव पंचायत तथा शिक्षण संस्थान का इस्तेमाल करते हैं। 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास अभिजात वर्ग की कथा होने पर भी इसमें भ्रष्टाचार से पीड़ित सामान्य किसानों का चित्रण है। भूमिसुधार कार्यक्रम द्वारा दान में दी गई जमीन सहकारी फॉर्म के रूप में किसी न किसी ज़मीदार के पास चली जाती थी। इस जमीन के अनुदान भी वे ले लेते थे लेकिन कर्ज किसानों पर आ जाता था। यह भ्रष्टाचार में डूबे भारतीय शासन व्यवस्था के अन्तविरोधों को ही व्यक्त करता है। आज हम फुटपाथों पर ठण्ड या गर्मी से मरते लोगों की खबरें सुनते हैं लेकिन उनके लिए कुछ करने को किसी के पास समय नहीं है। हमारे देश में हमेशा कर्मचारियों का आन्दोलन होता है। लेकिन कोई भी आन्दोलन अपने सही लक्ष्य तक शायद ही पहूँच पाता है। 'मकान' उपन्यास का नारायण कहता है ''अंतिम विजय प्रायः यक्षों के राजा कुबेर की ही होती है जिनके हाथ में सदैव मदिरा का पात्र रहता है।''2 भ्रष्टाचार के विविध रूपों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि यह एक बीमारी के रूप में राष्ट्र को खाए जा रही है। नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। धैर्य व संयम का स्थान आज विलासिता लेती जा रही है। फिर भी आज का जागरूक युवा मन भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहा है। श्रीलाल शुक्लजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उन सामाजिक पहलुओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है जो समाज की एकता को छिन्न-भिन्न कर रही हैं। जब हमारे मूल्य मानदण्ड बिखर जायेंगे तो सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जायेगी और यही विखराव समस्याओं के रूप में प्रकट होती है। उन्होंने समाज में फैले अपराधिक प्रवृत्तियों को प्रकाशित किया है। आर्थिक विपन्नता और पारिवारिक बिखराव, तनाव आदि ने अपराधिक प्रवृत्ति को तो विकसित किया ही मानवता का मूल्य भी घटा दिया। आज शहरों में ही नहीं गाँवों में भी वेश्यावृति होने लगी है। शुक्लजी के उपन्यासों में शिक्षा संस्थानों और वर्तमान शिक्षा प्रणाली की विसंगतियों की व्यापक रूप में अभिव्यक्ति हुई है। स्वातंत्रोत्तर भारत में शिक्षा के स्तर पर ग्रामीण और नगरीय परिवेश का भेद रहा। शैक्षणिक सुविधाओं का जितना विकास नगरों में हुआ, उतना गाँवों में नहीं हुआ। लगभग 50 वर्ष बीतने के बाद भी पाठशालाओं की स्थिति यथावत है। शिक्षा पद्धति का न तो आज तक कोई सुनिश्चित मानदण्ड बन सका है और न उसमें प्रयोग के स्तर पर किए गए परिवर्तन क्रांतिकारी सिद्ध हो सके है। जीवन को अपेक्षित स्तर की ओर उन्मुख करने में असमर्थ इस शिक्षा प्रणाली का दुष्परिणाम वर्तमान शिक्षित युवावर्ग की पलायनवादी मनोवृति में लक्षित किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में 'रागदरबारी' का एक उदाहरण इस प्रकार है 'इतिहास के मास्टर थे और अंग्रेजी पढ़ा रहे थे।3

ऐसी स्थिति में युवाओं का भविष्य चिन्तनीय हो गया है। आज मद्यपान की समस्या पहले से अधिक गम्भीर है। नए-नए शराब के अड्डे बनाए जाते हैं, क्योंकि इससे राज्य को आय मिलती है। राज्य का यह दायित्व बनता है कि वह सामाजिक बुराईयों के निराकरण की कोशिश करे। 'बिस्रामपुर का संत' में समाज में हो रहे नैतिक अवमूल्यन का चित्रण कुछ इस प्रकार है- "इस वक्त जब आराम से हम इस वातानुकूलित कमरे में गपशप कर रहे हैं, ठीक इसी वक्त इसी देश में न जाने कितनों की हत्या हो रही होगी, न जाने कितने बलात्कार हो रहे होंगे, कितनों को अपाहिज बनाकर भीख माँगने के लिए मज़बूर किया जा रहा होगा.....।"4 एक ओर जहाँ स्त्री-पुरूष के समान अधिकार की बात कही जा रही है वहीं दूसरी ओर स्त्रियों को समाज में अपनी जगह बनाने के लिए कड़ी मेहनत तथा विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ रहा है। बेरोजगारी की समस्या निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। महाविद्यालयों ओर विश्वविद्यालयों में उच्च-शिक्षा प्राप्त करके विद्यार्थी रोजगार विहीन व्यक्तियों में शामिल हो रहे हैं। इतना ही नहीं उन्हें दहेज के लिए जलाते भी लोगों को देर नहीं लगती। आज हमारा समाज नैतिक अवमूल्यन के अन्तिम छोड़ पर खड़ा है। अतः हम कह सकते हैं कि श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यासों में समाज में विद्यमान विभिन्न पहलुओं को अधिकतर नकारात्मक पद्धति से प्रस्तुत किया है। उदाहरण स्वरूप भ्रष्टाचार, अपराधिक प्रवृति, मद्यपान, दहेज की समस्या आदि। समाज के इस घृणित रूप को प्रस्तुत करके उपन्यासकार ने हमें इस समस्या से छुटकारा पाने को कहा है। समाज में विद्यमान समस्याओं से मुक्ति हेतु हमें मिल-जुल कर कार्य करना होगा तथा सामान्य कार्य पद्धति अपनानी होगी। जिससे सभी लोग सामाजिक विकास पथ पर बढ़ सके।

सन्दर्भ

1 परमानन्द श्रीवास्तव, उपन्यास का पुनर्जन्म, पृ.120
2 श्रीलाल शुक्ल, मकान पृ. 100
3 श्रीलाल शुक्ल, रागदरबारी, पृ. सं. 241
4 श्रीलाल शुक्ल, बिस्रामपुर का संत, पृ. 205